राजेन्द्र - संग्रहालय

बिहार विद्यापीठ

सदाकत आश्रम, पटना

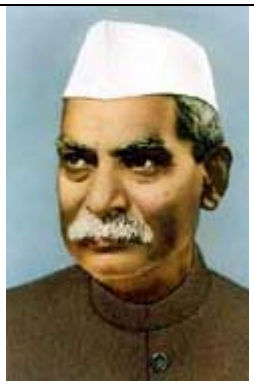

राजेन्द्र स्मृति संग्रहालय बिहार विद्यापीठ का ही एक अंग है । बिहार विद्यापीठ की स्थापना एक ऐसी ऐतिहासिक माँग की पूर्ति थी, जिसके आधार पर आज के हिन्दुस्तान की नींव डालने की कल्पना गाँधीजी ने की थी । उस वक्त संशोधित नियमावली के अनुसार बिहार विद्यापीठ के निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये:-

(क) भारत की राष्ट्रीय परिस्थिति के अनुकूल तथा महात्मा गाँधी के मौलिक सिद्धांतों के अनुरूप शिक्षा प्रदान करना;

(ख) भारत की सर्वांगीण उन्नति के लिए उपयुक्त कार्यकर्त्ताओं, संगठनों, तथा सेवकों का निर्माण;

(ग) लोक-सेवा

(घ) विश्व बन्धुत्त्व और विश्व शांति के भावों का यथासंभव क्रियात्मक प्रचार ।

वर्षों की गुलामी से उत्पीड़ित और विदेशी शासकों के जुल्म से तबाह इस देश में आजादी की भावना करवट बदलने लगी । महात्मा गाँधी के आह्वान पर बैरिस्ट्री छोड़कर मौ० मजहरूल हक ने गंगा के तट पर स्थित आम्रकुंज में एक आश्रम (सदाकत आश्रम) की स्थापना की जहाँ शांति का अटल साम्राज्य छाया हुआ था, काम करने की प्रेरक सुविधायें थीं और यहीं हमारे राष्ट्र के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद शिक्षण-प्रशिक्षण के कार्यक्रम में योगदान करते हुए बिहार में स्वतंत्रता संग्राम का संचालन करते रहे ।

राजेन्द्र बाबू इस संसार में नहीं रहे । हमारा वह वीर सेनानी देश को गुलामी की जंजीर से मुक्त कर और राष्ट्र को प्रगति के पथ पर आरूढ़ कर 28 फरवरी, 1963 को चला गया । सारे संसार में निबिड़ अन्धकार छा गया । भारतवर्ष पर यह प्रहार नियति ने तब किया, जब इस देश की पुनीत पावन धरती पर चीनियों का आक्रमण हुआ । अपने अनुयायियों के घोर कष्ट और परिवार तथा मित्रों को अन्धकार में छोड़ कर चला जाने वाला हमारा वह देशरत्न जिस स्नेह और अपनापन के संबल से बने "सदाकत आश्रम" के इस भवन में रहने आया था, यह भवन आज मात्र उनकी 'स्मृति' रह गया है ।

बिहार विद्यापीठ तथा नगर के अन्य गण्यमान्य व्यक्तियों के निर्णयानुसार सदाकत आश्रम के उन तीर्थस्थल सदृश्य दोनों मकानों को राष्ट्रीय स्मृति-स्तम्भ के रुप में रखने का निश्चय किया गया और देशरत्न के पदचिन्हों पर चलने की प्रेरणा के निमित्त उनके व्यवहार में आयी हुई सभी वस्तुओं को यथावत् रखने की बात निश्चित की गयी ।

यह आश्रम उन्हें प्यारा था, जो उनके राष्ट्रपति काल के शेष होने पर उनके द्वारा लिये गये निर्णय से स्पष्ट होता है । उन्होंने कहा-मैं सदाकत आश्रम के पवित्र रज पर ही जाना चाहता हूँ । और एक दिन सदाकत आश्रम के उसी चिरपरिचित आम्रकुंज में अपने पुराने एवं नये सहकर्मियों के बीच स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति, 16 वर्ष पश्चात् विराट् राष्ट्रपति भवन से चल कर सदाकत आश्रम में 14 मई 1962 को वापिस आये । सदाकत आश्रम का अतीत् गौरवगरिमा से, प्रेरणा से पूर्ण और त्याग तपस्या से अनुरंजित है । स्वर्गीय मजहरूल हक की सृष्टि यह आश्रम सत्याग्रहियों और देश पर प्राण न्योछावर करने वाले नौजवानों का रंगस्थल बन गया जहाँ जोश, देशभक्ति, मातृभक्ति, मातृप्रेम और आजादी के दीवाने अंगड़ाइयाँ लिया करते थे ।

सन् 1921 में राजेन्द्र बाबू के लिये ईंट और खर की एक कुटिया निर्मित हुई जिसके छोटे-छोटे कमरों में वे अपने दो सहकर्मी मथुरा बाबू और चक्रधर बाबू के साथ रह कर देश का काम करने लगे । प्रात:काल कार्यक्रम जमीन पर बिछी चटाई पर आरम्भ होता और इस कार्यक्रम में हमारी आजादी की लड़ाई पर बड़ा से बड़ा निर्णय लिया जाता ।

आज भी इस कुटिया का वह कमरा खड़ा है, जहाँ राजेन्द्र बाबू बैठते, चर्खा चलाते, बातें करते और समस्याओं का हल निकालते । उनकी स्मृति में, वह चौकी, वह पुराना रेडियो, वह डेस्क और न जाने क्या-क्या कितनी सिसकियाँ भरते हैं, यह कौन जाने । काश, इस कुटिया की दीवार और यहां की मिट्टी को जुबान होती, जहां एक दिन स्वयं राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के चरण इसे पवित्र कर गये थे । वह भी एक जमाना था जब इस आश्रम में आँखों को चकाचौंध करने वाली बिजली नहीं थी; जब इसको पुलिस के छापों का लगातार शिकार होना पड़ा । मगर इसका गौरव कभी मलिन नहीं हुआ । आश्रम में बिजली तो लग चुकी थी ।

बाबू का स्वास्थ्य दिनोंदिन गिरने लगा । डाक्टरों ने अच्छे और आरामदायक मकान में रहने पर जोर दिया । लोकनायक जयप्रकाश नारायण की प्रेरणा और सहयोग से एक मकान बाबू के आराम की दृष्टि से बनवाया गया जो अपनी सादगी के साथ आज भी विद्यमान है । मकान बनते समय कुछ आम वृक्षों के कटने की बात जब बाबू के सामने आई तो उन्होंने इसका विरोध किया और कहा, जिसकी शीतल छॉव में हम अभी तक प्रेरित हो रहे हैं और जो जमाने से हमारा साथी रहा है, हम उन वृक्षों के बिना नहीं रह सकेंगे । मंजिल के रास्ते जिसके साथ तय किया उसे काटकर मेरे लिये घर बने यह नहीं होगा । यही कारण था कि एक भी आम वृक्ष नहीं काटा गया । अगस्त 1962 में भवन तैयार हुआ, जहां हैदराबाद से लौटकर छज्जू बाग में दो महीने रहने के उपरांत बाबू आये । इस भवन में बाबू के रहने के कमरे तथा उनके द्वारा व्यवहृत सभी सामान यथावत विद्यमान हैं । उसका वह खुला बरामदा भी वर्त्तमान है जहां वे बैठते, प्रार्थना करते तथा देश की गम्भीरतम समस्याओं पर विचार करते थे ।

सभी सामानों के साथ भी बाबू का घोर एकाकीपन परिलक्षित होता रहा क्योंकि माताजी का स्वर्गवास हो चुका था और भारतीय परम्परा के अनुरूप जिस मर्यादापूर्ण साहचर्य का निर्वाह बाबू ने लगभग 66 वर्षों तक किया उसके अभाव में अपने एकाकीपन को वे भूल नहीं पाये । माताजी के लिए बना कमरा सौभाग्यशाली नहीं सिद्ध हो सका क्योंकि इस भवन में प्रविष्ट होने के पूर्व उनका देहावसान हो चुका था ।

सब कुछ लुट जाने के बाद जिस प्रकार हम केवल उसकी स्मृति संजोकर रख लेते हैं-उसी तरह उस युग-पुरूष के विदा हो जाने के बाद, उनकी समस्त स्मृतियों का एक एलबम उनका यह कमरा रह गया है, जहां वे सभी सामान संजोकर रखे गये हैं जो समय-समय पर उनके स्नेह के उपहार स्वरूप भेंट किये गये थे ।

यही वे सामान भी हैं, जिन्हें उनके स्पर्श ने महत्ता दी । वह अचकन, जिसे पहनकर भारत के प्रथम राष्ट्रपति ने शपथ-ग्रहण तथा संविधान को हस्ताक्षर कर प्रमाणित किया, इस कमरे में सुरक्षित हैं । स्नेह और श्रद्धा को दी गयी भेंट का यह संग्रह सदा के लिए प्राणों में नई ज्योति का संचार करता रहेगा । सामानों में विविधता के अतिरिक्त कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं, जो अकथनीय हैं । आप यहां छोटा-सा एक ऐसा तावा देखेंगे, जिस पर अठारहों अध्याय गीता हस्तलिखित है ।

आज राजेन्द्र बाबू नहीं रहे । उनकी स्मृति का प्रकाश आने वाली पीढ़ी का पथ-प्रदर्शन करेगा । आम्रकुंज के मध्य आज भी चबूतरा उसी तरह अवस्थित है, जहाँ बाबू के प्रवचन, आश्रम-वासियों की प्रार्थना और देशभक्तों का विचार-विमर्श हुआ करता । इस अटल विश्वास के साथ "राजेन्द्र स्मृति" के नाम से "सदाकत आश्रम" की गोद में निर्मित दोनों भवनों को राष्ट्रीय स्मृति स्तम्भ के रूप में जनता को समर्पित करते हुए बिहार विद्यापीठ गौरव का अनुभव करता है और आशा करता है कि इसके माध्यम से

विचारकों को विचार, इतिहासकारों को इतिहास की सामग्री तथा शोधकों को शोध-सामग्री इन भवनों में सुरक्षित पाण्डुलिपियों, चित्रों तथा अन्य वस्तुओं से सदा प्राप्त होती रहेगी ।

राजेन्द्र-स्मृति-भारतवर्ष का एक तीर्थस्थान है, जहाँ से चलकर बाबू राष्ट्रपति भवन पहुँचे और राष्ट्रपति भवन से चलकर जहाँ उन्होंने अंतिम सांस लिया ।

प्रतिवर्ष इस अवसर पर दीपोत्सव का आयोजन होता रहा है और कोई न कोई समाज सेवी, निष्ठावान महापुरूष के हाथों जयंती दीप प्रज्वलित होती रही है ।

जयप्रकाश जी ने 14 जनवरी 1974 को कहा था:-

"हमारी बहुत अभिलाषा है कि जो इस विद्यापीठ का, इस सदाकत आश्रम का पूर्व इतिहास रहा है, उसके अनुरूप हम इसको बनायें-यह विद्या का स्थान रहा है । हम चाहते हैं कि हम सब मिल कर यहाँ नीचे से लेकर विश्वविद्यालय तक की शिक्षा का एक ऐसा प्रबन्ध करें जैसा देश में कहीं नहीं है । हम एक प्रयोग करना चाहते हैं कि जिस शिक्षा को प्राप्त करके नवयुवक, युवतियाँ जब निकले तो नौकरी की भीख न माँगते फिरें बल्कि अपने पैरों पर खड़े होकर स्वावलम्बन बनें । साथ-साथ देश और समाज की सेवा भी करें ।" बापू ने नई तालीम के नाम पर शिक्षा का एक नया आदर्श, नया सिद्धांत पेश किया जो जगत मान्य है । हमें इसे हर दृष्टि से चालू रखना चाहिये ।"